लोकविद्या समूह के बीच चर्चा के लिए

समाज संगठन के प्रमुख स्तम्भ

-चित्रा सहस्रबुद्धे

30 मई 2021

आज पूँजी, राजनीति, तकनीकी और प्रशासन के गठबंधन ने मनुष्य को इस तरह से जकड़ लिया है कि बहुधा इनसे हटकर या ऊपर उठकर सोचना बेहद कठिन हो गया है. तथापि अन्याय, असत्य, अपमान और अत्याचार के बढ़ते जा रहे इस दौर में ऐसा करने के प्रयास आवश्यक हैं. पिछली दो-ढाई सदियों से यूरोप व अमेरिका के नेतृत्व में दुनिया को जिसतरह ढालने की कोशिश चली थी उसी का नतीजा वर्तमान का यह दौर है. इस दौर का दर्शन, जीवनमूल्य, तर्क, संगठन और व्यवहार के साधन/तरीके आदि सब कुछ मिलकर हमारे विवेक और सक्रियता को घेरते हैं, कुंद करते हैं. पहल लेने के हर रास्ते पर बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर देते हैं. फ़्रांसीसी क्रांति के बुनियादी मूल्यों Equality (केवल कानून के सामने बराबरी), Freedom (स्वतंत्रता) और Fraternity (बंधुत्व) को दुनियाभर में डेमोक्रेसी का आधार बनाया और आज भी दुनिया में इसे सबसे अधिक सम्मान का स्थान मिला हुआ है. यह गौर करने की बात है कि सामंतों के खिलाफ पूंजीवाद के पक्ष में हुई फ़्रांस की क्रांति बहुसंख्य सामान्य लोगों को बराबर के अधिकार नहीं दिला पायी थी. इस क्रांति ने दुनियाभर में पूँजीवाद का राज कायम करने का रास्ता खोला. जब यूरोप के देशों ने उपनिवेशीकरण के जरिये अन्य देशों को गुलाम बनाकर लूटना शुरू किया तब इन मूल्यों और डेमोक्रेसी की व्यवस्थाओं की संकुचितता और पाखण्ड खुलकर सामने आने लगा. बराबरी, भाईचारा और स्वतंत्रता के मूल्य मोटे तौर पर केवल पूँजीवाद की आर्थिक/सामाजिक गतिविधियों में शामिल लोगों को ही हासिल रहे हैं और इसकी कीमत बड़ी आबादी ने गुलाम बनकर चुकाई है. जब देश आज़ाद हुए तो उन्होंने इसी व्यवस्था को जारी कर अपने ही देश की आबादी के थोड़े हिस्सों को पूंजीवादी व्यवस्था में शामिल किया और शेष सभी को गुलाम बनाया, जिनमें मुख्यतः किसान, कारीगर, आदिवासी और छोटी पूँजी के बल पर सेवा और दुकानदारी करने वाले समाज थे. हमारे देश में इस प्रक्रिया की बहुत सटीक समझ 1980 के दशक से चल रहे किसान आन्दोलन ने सामने रखी और इसे देश का 'इण्डिया-भारत में विभाजन' कहा.

<u>नवम्बर 2020 से चल रहे किसान आन्दोलन से प्रेरणा</u>

आज का किसान आन्दोलन भी इस कठिन दौर में हमें नए ढंग से सोचने का आवाहन कर रहा है. वर्तमान त्रासद दौर की मांग है कि समाज संगठन और सत्ता के प्रतिष्ठित दर्शन, तर्क, मूल्य और व्यवस्था से ऊपर उठकर सोचें-विचारें. इस सन्दर्भ में नवम्बर 2020 से शुरू हुए किसान आन्दोलन की कुछ प्रमुख बातें यहाँ उल्लेखनीय हैं जिन पर ध्यान दिया जाना चाहिए.

1. यह आन्दोलन एक लम्बे समय से अराजनीतिक बना हुआ है. इसका अर्थ है कि देश की एक बहुत बड़ी आबादी का राजनीति और राजनीतिक व्यवस्थाओं में विश्वास नहीं है और उसके पास इस समाज संगठन और सञ्चालन के कुछ अलग सुझाव अवश्य हैं.
2. इस आन्दोलन में सामूहिक नेतृत्व और पंचायतों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है. जिसके नतीजेस्वरुप अनेक समाजों की व्यापक भागीदारी लोक सक्रियता का स्रोत बन चुकी है. यह लोक भागीदारी आधारित समाज संगठन और सञ्चालन के रूपों की फसल की ज़मीन बन रही है.
3. इस आन्दोलन ने राजनीतिक नेताओं, आर्थिक और कृषि क्षेत्रों के विशेषज्ञों की सलाह/दखल को सीधे ख़ारिज किया है. इसका अर्थ यही है कि वर्तमान में कृषि और आर्थिक गतिविधियों के संगठन की नीतियों से यह आन्दोलन न केवल अपना विरोध दर्ज कर रहा है बल्कि इस पूरी व्यवस्था के आधारभूत ज्ञान और लक्ष्यों पर सवाल उठा रहा है. आज के राजनीतिक दल और विशेषज्ञ वर्तमान व्यवस्था के पोषक ही सिद्ध हो चुके हैं. उनके ज्ञान में लोकहित में कार्य करने की कोई कारगर विद्या, ज्ञान अथवा सुझाव नहीं है.
4. यह आन्दोलन सरकार से सीधे वार्ता का आग्रह करता रहा है. वर्तमान राजनीतिक मंशा और व्यवस्थायें इस संवाद को नहीं होने देना चाहती हैं यह अब स्पष्ट होता जा रहा है.
5. इस आन्दोलन को लगभग हर प्रदेश, क्षेत्र और तबके का समर्थन हासिल है. बहुत बड़े पैमाने पर महिलाओं की सक्रिय भागीदारी रही है.
6. पूरे दौर में किसान आन्दोलन शांतिपूर्ण रहा है. लगातार चल रही बड़ी-बड़ी पंचायतों में विचार, वाणी और क्रिया में कहीं भी हिंसा को स्थान नहीं दिया है. यह भागीदार

समाजों के और आन्दोलन के संगठन और सञ्चालन के अभूतपूर्व 'ज्ञान' का ही नतीजा हो सकता है. न्याय, प्रेम, त्याग और भाईचारे के मूर्त रूप और घटनाओं ने आन्दोलन को जो शक्ति दी है उससे किसानों के प्रति सत्ता के असत्य वचन और षड्यंत्रकारी प्रयास स्वतः ही खुलकर सामने आ गए हैं.

7. पिछले छः महीनों से विभिन्न धरना स्थलों पर किसानों और उनके समर्थन में आये व्यापक जनसमूहों ने मिलकर रहने, सोने, भोजन और स्वछता की जो व्यवस्थाएं कीं वे हमें यह विशवास दिलाने के लिए पर्याप्त हैं कि देश का भारत में रहने वाला समाज सबको साथ लेकर सबके लिए भोजन, रहने और ओढ़ने की व्यवस्थाओं का संगठन करने की क्षमता रखता है.
8. किसान संगठनों पर यह आरोप लगता रहा है कि ये ट्रेड यूनियनों की तरह केवल अपने बारे में सोचते हैं. लेकिन इस बार किसान आन्दोलन इस खोल से भी बाहर आने में कुछ हद तक सफल हुआ है. आन्दोलन के नारे "रोटी को तिजोरी में बंद न होने देंगे" "भूख का व्यापार नहीं होने देंगे", "हम अगली कौमों की फसल बचाने की बात करते हैं" इसे मज़बूती के साथ अभिव्यक्त करते हैं. शुरू से ही कृषि के तीनों कानूनों को आन्दोलन ने गरीबों के भोजन को छीनने वाला बताया है.

पुनर्निर्माण की दिशा

आज किसान आन्दोलन अपनी मांगों को हासिल करने में सफल होगा या नहीं, कहा नहीं जा सकता. लेकिन इस आन्दोलन ने गाँव, किसान, कारीगर, मज़दूर समाजों को एक साथ लेकर और बृहत समाज समर्थन हासिल कर आन्दोलन के संगठन/सञ्चालन की क्षमताओं को सामने लाया है. अगर लोकोन्मुख समाज और देश का निर्माण होना है तो इन समाजों के हाथ में बागडोर होनी चाहिए. आन्दोलन का पूरा माहौल निश्चित ही हमें हमारी जड़ें, हमारी विरासत, हमारे मूल्य और जीवन दर्शन की ज़मीन पर लौटने और उनके पुनर्निर्माण का आवाहन करता नज़र आता है. किसान आन्दोलन की ऊपर लिखी बातों के संकेतों को संजोने का प्रयास करते हुए लोकविद्या दर्शन और लोकविद्या आन्दोलन के अनुभव के आधार पर इस पुनर्निर्माण का एक नज़रिया हम यहाँ रखेंगे.

1. **जीवनआवश्यक वस्तुयें :** रोटी, कपड़ा, मकान
2. **जीवन के साधन :** ज्ञान, संसाधन, उत्पादन, आपूर्ति

3. **जीवन मूल्य :** न्याय (नैतिक), त्याग, प्रेम, भाईचारा
4. **जीवन संगठन के आधार :** सत्य, सामान्य जीवन, स्वायत्तता, लोकविद्या, स्वदेशी
5. **संगठन इकाई के आधार :** भौगोलिक क्षेत्र, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, अन्य

समाज के प्रमुख स्तंभों के अंग और उनके आपसी संबंधों का अनुमान लगाने के लिए ही उपरोक्त बिन्दुओं की मदद से एक चित्र बनाने का प्रयास है. उद्देश्य इस बात को रेखांकित करने का है कि न्याय, त्याग, प्रेम और भाईचारा के जीवनमूल्य शेष चारों के हर अंग के अस्तित्व, कार्यशीलता और पुनर्निर्माण में निर्णायक भूमिका में होंगे. यहीं नहीं बल्कि हर स्तम्भ के विविध अंग अन्य स्तंभों के अंगों से निरंतर गतिशील संबंधों में ही निर्मित होते देखे जायेंगे. हालाँकि यह चित्र यंत्रवत जान पड़ता है लेकिन अगर जीवों के शरीर से इसकी तुलना करें तो शायद यह सहज जान पड़ेगा. जिस तरह शरीर के हर अंग का एक निश्चित कार्य तय है लेकिन सभी अंग हर अंग से संपर्क में है और उसकी ज़रूरतों को पूरा करने का कार्य करते हैं यह कुछ वैसा ही है.

एक महत्वपूर्ण बात और है जो इस चित्र में दर्शाई नहीं जा सकी है. जिसे अमीर ख़ुसरों ने बहुत सुन्दर ढंग से रखा है ...

ख़ुसरो बाजी प्रेम की, जो मैं खेली पी के संग.
छाप तिलक सब छीन ली रे, मोसे नैना मिलाइके.

यानि यह कि ये जीवनमूल्य, जीवन-संगठन के हर अंग और हर इकाई के लिए इस ढंग से कार्य करने का आदर्श रखते है, जिसमें वे अपनी पहचान समग्र में समर्पित कर दें.

स्पष्ट है की यहाँ न्याय और भाईचारा के मूल्य समाज के मूल्य है न कि डेमोक्रेसी के तहत मान्य, जो मात्र किन्हीं विशेष वर्ग अथवा कानून के तहत माने गए हैं. यह चित्र एक न्यायपूर्ण समाज के बारे में सोचने के रास्ते बनाने का प्रयास है.

<u>समाज चिंतन</u>

न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में सभी को रोटी, कपड़ा और मकान मिलना और यह सम्मानपूर्वक मिलना पहली और अनिवार्य शर्त है. केवल मनुष्य ही को नहीं बल्कि हर जीव को उसका प्राकृतिक भोजन और निवास मिलता रहे यह भी उतना ही ज़रूरी है. इन भौतिक

आवश्यकताओं को सम्मानपूर्वक हासिल करने के लिए ज्ञान, संसाधन, उत्पादन और आपूर्ति का संगठन कुछ इस तरह से होना ज़रूरी है कि इन गतिविधियों में अधिक से अधिक आबादी शामिल हो. दूसरे शब्दों में हर हाथ में इनमें से किसी गतिविधि का हिस्सा पूरा करने की ज़िम्मेदारी हो. यह संभव तभी होता नज़र आता है, जब हम हर मनुष्य और समाज को एक ज्ञानपुंज के रूप में देखें. ऐसे ज्ञानपुंज जो अपने परिवेश के संसाधनों, उत्पादन और आपूर्ति के विविध तरीकों के जानकार, सृजनकर्ता, अविष्कारकर्ता, संगठनकर्ता और विचारक हैं. यह हमें इस बात पर ले आता है कि जीवन की आवश्यक वस्तुयें जुटाने के लिए ज्ञान, संसाधन, उत्पादन, वितरण की विधाओं में जितनी विविधता होगी उतनी ही सहजता से समाज के लोग न्यायपूर्ण तरीकों से जीवनावश्यक वास्तुओं को जुटा सकेंगे. दूसरे शब्दों में जीवन संगठन के साधनों में विविधता को मान्यता देने और इनमें भेदभाव अथवा ऊँच-नीच न करने से समाज में न्याय और बराबरी का मार्ग खुलता है. ऐसे मार्ग चिन्हित और निर्मित किये जा सकें इसके लिए न्याय (नैतिक), त्याग, भाईचारा और प्रेम बुनियादी जीवनमूल्य बनते हैं.

हमारे देश के समाजों में सदियों से इन मूल्यों की अखंड प्रतिष्ठा रही है. ज्ञान, सत्य और लोकहित को न्याय, त्याग और प्रेम की कसौटी में परखा जाता रहा है और न्याय, त्याग और प्रेम को सत्य, ज्ञान और लोकहित की कसौटी पर खरा उतरना ज़रूरी रहा है. संसाधन, प्रक्रियायें, उत्पादन के उपकरण, तकनीकी, प्रणाली, आपूर्ति, उपभोग आदि के चयन और इस्तेमाल के हर कदम पर समाज में त्याग और प्रेम का आग्रह न्याय व लोकहित के आधार को मज़बूती देता है. ज्ञान की गुणवत्ता और स्वीकार्यता का आधार भी इससे ही व्यापक बनता है. ये सब मिलकर साधनों और इनके व्यवस्थापन के ढांचों में वितरित सत्ता के निर्माण का रास्ता बनाते हैं तथा विविध प्रकार की ज्ञान धाराओं में भाईचारा हो पाने के वास्तविक रास्ते खुलते हैं. अगर सबको रोटी, कपड़ा, मकान मिलना है तो इसके साधनों तक भी सभी की पहुँच होनी होगी और ऐसा तभी हो सकता है जब साधनों के प्रत्येक अंग में भाईचारा, त्याग और न्याय के मूल्य निहित हों. साध्य और साधन दोनों का ढांचा न्याय, त्याग, प्रेम और भाईचारे के मूल्यों पर खड़ा होना होगा. ये बुनियादी मूल्य स्वायत्तता, सामान्य जीवन, लोकविद्या और स्वदेशी जैसे विचारों को समाज संगठन के ठोस आधार बनाते हैं. ये आधार जितने व्यापक होंगे उतने ही न्याय, भाईचारे और प्रेम के भाव और मूल्य समाज/देश में मज़बूत होंगे.

आज राजनीति, व्यापार, आधुनिक-उद्योग, प्रशासन, सेवा, शिक्षा, चिकित्सा आदि लगभग सभी क्षेत्रों के ढांचे '**मुनाफे की निरंतर वृद्धि**' के बुनियादी मूल्य पर खड़े हैं. लेकिन

इसका मतलब यह नहीं है की न्याय, त्याग, और भाईचारे जैसे मूल्य मर गए हैं. **इनका समकालीन जीवंत रूप सामान्य जीवन में प्रकट होता रहता है और मनुष्य की संवेदनाओं, आपसी सम्बन्ध, सृजन और कलाक्रियाओं में अभिव्यक्ति पाता है. ये संवेदनायें, क्रियाएं और कृतियाँ मिलकर ही सत्य-असत्य, नैतिक-अनैतिक के तर्क का वो आधार बनाती हैं, जो समाज के लिए न्याय के रास्ते प्रशस्त करता है. 'जीवनमूल्य' और 'जीवन संगठन के आधार' परस्पर निर्भर हैं, एक दूसरे को गढ़ते हैं, पुष्ट करते हैं और एक ऐसे नैतिक, गतिशील, सक्रिय और न्यायपूर्ण विश्वदृष्टि की बुनियाद बनते हैं, जिसमें 'भौतिक सुविधाएँ', उनको 'जुटाने के साधन' और 'जीवन-संगठन' के उत्सर्गकारी रूप आकार लेते नज़र आते हैं.** ऐसे समाज में अतिरिक्त उत्पादन का मूल्य संवेदना, त्याग और न्याय आदि के विवेकपूर्ण संतुलन से बनता है. इन मूल्यों पर खड़े समाज ही व्यक्ति, जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, नस्ल, प्रदेश, देश आदि के प्रति कर्तव्यों को निभाते हुए भी इनकी सीमाओं को लांघकर समग्र के प्रति कर्तव्य को पूरा कर पाते हैं.

यह बात गौर करने की है कि आज चल रहे किसान आन्दोलन में ऐसे समाज को गढ़ सकने के भ्रूण हैं. ये भ्रूण विकसित हों और व्यापकता ग्रहण करें तो निश्चित ही एक बेहतर दुनिया बनाने की उम्मीद की जा सकती है. किसान, कारीगर, आदिवासी, मज़दूर परिवार मिलकर देश का एजेंडा तय करें इसके लिए मार्ग खुल गया है.

●

[विद्या आश्रम से प्रकाशित *लोकस्मृति* और *स्वराज परम्परायें* नाम की पुस्तिकाओं में समाज संगठन के कुछ बुनियादी स्तंभों की विस्तार से चर्चा है, जो इस लेख में व्यक्त विचारों के लिए प्रासंगिक हैं. ये पुस्तकें विद्या आश्रम से प्राप्त की जा सकती हैं तथा विद्या आश्रम की वेब साईट www.vidyaashram.org पर भी उपलब्ध हैं.]

संपर्क :
विद्या आश्रम,
सा 10/82 ए, अशोक मार्ग, सारनाथ
वाराणसी-221007
ई-मेल : vidyaashram@gmail.com
फोन : 9838944822